Nav Jyoti
An International Multidisciplinary Journal
Peer Reviewed Refereed Journal
Published by Srijan Research Foundation, Varanasi India
Vol.14, N. 29, Sept. 2026
DOI: https://doi.org/10.68868/1429nj02
https://navjyotijournal.in/web_dih

''आरक्षण से लाभ प्राप्त करने वाले परिवारों में शैक्षिक आकांक्षाओं का पीढ़ीगत परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''

संदीप कुमार पाण्डेय
शोध छात्र– समाजशास्त्र
लाल बहादुर शास्त्री, स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली
सम्बद्ध : महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सारांश

भारतीय समाज में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण माध्यम रही है। सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से वंचित समूहों को उच्च शिक्षा में अवसर प्रदान करने के लिए आरक्षण नीति का विकास सामाजिक न्याय की व्यापक संवैधानिक अवधारणा के अंतर्गत हुआ। उच्च शिक्षा में आरक्षण का सामान्य अध्ययन प्रायः प्रवेश, प्रतिनिधित्व और शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में किया जाता है, जबकि इसके दीर्घकालीन पारिवारिक और पीढ़ीगत प्रभाव पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र इसी कम चर्चित पक्ष को केंद्र में रखता है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि आरक्षण अथवा सकारात्मक कार्रवाई के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले परिवारों में अगली पीढ़ी की शैक्षिक आकांक्षाओं में किस प्रकार परिवर्तन उत्पन्न हो सकता है। विशेष रूप से यह अध्ययन माता–पिता की शैक्षिक स्थिति, प्रथम पीढ़ी के उच्च शिक्षित सदस्य, परिवार की शैक्षिक आकांक्षा, बच्चों के लिए अपेक्षित शिक्षा, पेशागत आकांक्षाओं तथा शिक्षा के सामाजिक मूल्य के बीच संबंध को समाजशास्त्रीय दृष्टि से समझने का प्रयास करता है।

अध्ययन का आधार वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति तथा उपलब्ध द्वितीयक साहित्य है। भारतीय संदर्भ में उपलब्ध शोध से यह संकेत मिलता है कि माता–पिता की शैक्षिक आकाक्षाएँ बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों से संबंधित हैं था शिक्षा अंतर–पीढ़ीगत गतिशीलता का माध्यम बन सकती है। इसी प्रकार भारत में affirmative action के अंतर–पीढ़ीगत प्रभाव पर हालिया शोध ने उच्च शिक्षा में आरक्षण के लाभार्थी माताओं के बच्चों के परिणामों में सकारात्मक प्रभावों का अध्ययन किया है।

इस शोध–पत्र का केंद्रीय तर्क यह है कि आरक्षण का प्रभाव केवल उस विद्यार्थी तक सीमित नहीं रहता जिसे किसी विशेष अवर का प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुआ है; उच्च शिक्षा से उत्पन्न अनुभव, आकांक्षाएँ,

सामाजिक नेटवर्क और परिवार की शिक्षा संबंधी सोच अगली पीढ़ी के लिए भी नए अवसरों का निर्माण कर सकती है।

प्रमुख शब्द : आरक्षण नीति, शैक्षिक आकांक्षा, पीढ़ीगत परिवर्तन, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी, उच्च शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तन, कमजोर वर्ग, सामाजिक न्याय।

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना ऐतिहासिक रूप से असमानताओं से प्रभावित रही है। जाति, वर्ग, लिंग, आर्थिक स्थिति और सामाजिक पृष्ठभूमि ने शिक्षा एवं अन्य जीवन–अवसरों तक पहुँच को प्रभावित किया है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में समान अवसर को सामाजिक न्याय का महत्वपूर्ण आधार माना गया है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 46 में राज्य को समाज के कमजोर वर्गों, विशेष रूप से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक एवं आर्थिक हितों को विशेष देखभाल के साथ बढ़ावा देने का निर्देश दिया गया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में आरक्षण नीति के क्रियान्वयन के संबंध में न्छब् ने भी दिशा–निर्देश जारी किए हैं।

आरक्षण नीति को सामान्यतः प्रवेश एवं प्रतिनिधित्व के संदर्भ में समझा जाता है। परंतु समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसका प्रभाव इससे कहीं व्यापक हो सकता है। जब किसी ऐसे परिवार का सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त करता है जहाँ पिछली पीढ़ियों में उच्च शिक्षा का अनुभव नहीं रहा, तो शिक्षा केवल उस व्यक्ति के जीवन को प्रभावित नहीं करती, बल्कि पूरे परिवार की सामाजिक कल्पना को बदल सकती है।

उदाहरण के लिए, यदि परिवार की पहली पीढ़ी का कोई सदस्य महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में पहुँचता है, तो उसके छोटे भाई–बहनों और अगली पीढ़ी के बच्चों में भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा विकसित हो सकती है। परिवार में शिक्षा को लेकर दृष्टिकोण बदल सकता है और बच्चों के लिए अपेक्षित पेशों का दायरा बढ़ सकता है।

यहीं से प्रस्तुत शोध का प्रमुख प्रश्न उत्पन्न होता है–

1. क्या आरक्षण से प्राप्त उच्च शिक्षा का अवसर परिवार की अगली पीढ़ी की शैक्षिक आकांक्षाओं को बदल सकता है?
2. अध्ययन की नवीनता

यह शोध–पत्र आरक्षण नीति का सामान्य मूल्यांकन नहीं करता। इसका केंद्र आरक्षण के संभावित पीढीगत प्रभाव हैं।

इस अध्ययन में आरक्षण को एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया है जो निम्नलिखित श्रृंखला को जन्म दे सकती है–

आरक्षण / विशेष अवसर

↓

पहली पीढ़ी का उच्च शिक्षा में प्रवेश

↓

शैक्षिक अनुभव एवं उपलब्धि

↓

परिवार की सोच में परिवर्तन

↓

अगली पीढ़ी की शैक्षिक आकांक्षा में वृद्धि

↓

उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

↓

पेशागत आकांक्षाओं का विस्तार

↓

दीर्घकालीन सामाजिक गतिशीलता

इस प्रकार शोध का केंद्र ''आरक्षण से कितने विद्यार्थियों को प्रवेश मिला'' से आगे बढ़कर यह समझना है कि शिक्षा के अवसर परिवार के भीतर किस प्रकार सामाजिक आकांक्षाओं को पुनर्गठित कर सकते हैं।

3. अध्ययन की समस्या

भारतीय समाज में अनेक परिवारों में उच्च शिक्षा का अनुभव पहली बार किसी एक सदस्य के माध्यम से आया है। ऐसे विद्यार्थी अपने परिवार के लिए केवल विद्यार्थी नहीं होते, बल्कि वे उच्च शिक्षा की नई सामाजिक संस्कृति के वाहक भी बन सकते हैं।

प्रथम पीढ़ी के शिक्षित सदस्य के सामने कई चुनौतियाँ हो सकती हैं– आर्थिक संसाधनों की कमी, शैक्षणिक मार्गदर्शन का अभाव, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पूँजी की कमी और उच्च शिक्षा की संस्थागत प्रक्रियाओं से अपरिचय।

हालिया भारतीय साहित्य में प्रथम पीढ़ी के उच्च शिक्षा विद्यार्थियों के अनुभवों में पूँजी की कमी, तैयारी संबंधी अंतर, भौगोलिक संरचनात्मक बाधाएँ, सामाजिक प्रभाव और आकांक्षाओं जैसे आयामों की पहचान की गई है।

लेकिन यदि वही विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेता है, तो उसके अनुभव अगली पीढ़ी के लिए संसाधन बन सकते हैं। उसके बच्चों को महाविद्यालयों, पाठ्यक्रमों, प्रतियोगी परीक्षाओं, छात्रवृत्तियाँ और रोजगार के बारे में पहले से अधिक जानकारी मिल सकती है।

इसलिए अध्ययन की समस्या को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

आरक्षण से प्राप्त उच्च शिक्षा का अवसर परिवार की अगली पीढ़ी की शैक्षिक आकांक्षाओं और सामाजिक दृष्टिकोण को किस सीमा तक प्रभावित कर सकता है?

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- आरक्षण से लाभ प्राप्त परिवारों में शिक्षा के प्रति बदलती सामाजिक दृष्टि का अध्ययन करना।
- पहली पीढ़ी के उच्च शिक्षित सदस्य की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।
- अगली पीढ़ी की शैक्षिक आकांक्षाओं में संभावित परिवर्तन का अध्ययन करना।
- माता–पिता की शैक्षिक स्थिति और बच्चों की शिक्षा संबंधी आकांक्षाओं के संबंध को समझना।
- उच्च शिक्षा के माध्यम से परिवार में उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
- शिक्षा एवं पेशागत आकांक्षाओं के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
- आरक्षण से प्राप्त अवसर के दीर्घकालीन सामाजिक प्रभाव को समझना।
- पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करना।
- कमजोर वर्गों के परिवारों में शिक्षा के बढ़ते सामाजिक महत्व का अध्ययन करना।

- ऐसी नीतिगत संभावनाओं की पहचान करना जो एक पीढ़ी के शैक्षिक लाभ को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में सहायक हों।

5. शोध–पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं समाजशास्त्रीय व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है।

इस शोध–पत्र में उपलब्ध द्वितीयक साहित्य, शोध–पत्रों, नीति दस्तावेजों तथा उच्च शिक्षा और आरक्षण से संबंधित सामग्री का उपयोग किया गया है।

भविष्य में इस विषय पर प्राथमिक अध्ययन के लिए उन परिवारों को अध्ययन की इकाई बनाया जा सकता है जिनमें परिवार की पहली पीढ़ी ने आरक्षण अथवा अन्य सकारात्मक कार्रवाई के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त की हो।

ऐसे अध्ययन में निम्न प्रकार की जानकारी एकत्र की जा सकती है–

- पिता की शिक्षा
- माता की शिक्षा
- परिवार के प्रथम उच्च शिक्षित सदस्य की शिक्षा
- विद्यार्थी की वर्तमान शिक्षा
- आरक्षण से प्राप्त अवसर
- परिवार की शिक्षा संबंधी आकांक्षा
- बच्चों के लिए अपेक्षित शिक्षा
- पेशागत आकांक्षा
- उच्च शिक्षा के प्रति परिवार का दृष्टिकोण
- परिवार में शिक्षा पर होने वाला व्यय
- अगली पीढ़ी के लिए शैक्षिक योजनाएँ

6. सैद्धांतिक आधार

6.1 सामाजिक गतिशीलता का सिद्धांत

समाजशास्त्र में सामाजिक गतिशीलता व्यक्ति या समूह की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की प्रक्रिया है। शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण माध्यम मानी जाती है।

यदि किसी सामाजिक रूप से वंचित परिवार का सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त करके बेहतर पेशे में प्रवेश करता है, तो परिवार की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की संभावना बढ़ सकती है।

इस प्रकार आरक्षण से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला प्रथम व्यक्ति परिवार के लिए सामाजिक गतिशीलता की शुरुआत कर सकता है।

6.2 पियरे बोरदियो और सांस्कृतिक पूँजी

पियरे बोरदियो के सांस्कृतिक पूँजी संबंधी विचार इस अध्ययन को समझने में उपयोगी हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त माता–पिता अपने बच्चों को केवल आर्थिक संसाधन ही नहीं देते, बल्कि –

- शिक्षा का महत्व,
- अध्ययन की आदत,

- संस्थागत जानकारी,
- भाषा एवं व्यवहार संबंधी ज्ञान,
- करियर संबंधी जानकारी
- जैसी सांस्कृतिक पूँजी भी प्रदान कर सकते हैं।

इस दृष्टि से पहली पीढ़ी की उच्च शिक्षा अगली पीढ़ी के लिए नई सांस्कृतिक पूँजी का निर्माण कर सकती है।

7. प्रथम पीढ़ी के उच्च शिक्षित सदस्य की भूमिका

किसी परिवार में पहला व्यक्ति जब उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तो वह परिवार के अन्य सदस्यों के लिए उदाहरण बन सकता है।

पहले जहाँ महाविद्यालय की शिक्षा परिवार के लिए अपरिचित क्षेत्र थी, वहीं अब परिवार में कोई व्यक्ति–

प्रवेश प्रक्रिया समझता है, परीक्षा प्रणाली से परिचित होता है, छात्रवृत्ति की जानकारी रखता है, प्रतियोगी परीक्षाओं को समझता है, रोजगार के विकल्पों से परिचित होता है।

इस प्रकार प्रथम पीढ़ी का शिक्षित सदस्य परिवार के भीतर शैक्षिक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है।

8. परिवार की शैक्षिक आकांक्षाओं में परिवर्तन

शैक्षिक आकांक्षा से आशय उस स्तर की शिक्षा से है जिसे परिवार या विद्यार्थी भविष्य में प्राप्त करना चाहता है। यदि माता–पिता स्वयं उच्च शिक्षा से वंचित रहे हों, तो उनके बच्चों के लिए उच्च शिक्षा प्रारंभ में दूर की संभावना हो सकती है। लेकिन परिवार के किसी सदस्य के उच्च शिक्षित होने के बाद शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बदल सकता है।

उदाहरण के रूप में–

पहली पीढ़ी :–''बच्चा कम से कम स्नातक कर ले।''

अगली पीढ़ी :– ''बच्चा स्नातकोत्तर, शोध, व्यावसायिक या प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करे।''

यह परिवर्तन केवल शिक्षा के स्तर का परिवर्तन नहीं है, बल्कि परिवार की सामाजिक आकांक्षा की संरचना में परिवर्तन है।

9. माता–पिता की आकांक्षा और बच्चों की शिक्षा

भारत में किए गए शोध से यह प्रमाण मिलता है कि माता की शैक्षिक आकांक्षा और बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया हैय यह संबंध जाति, परिवार की आय और ग्रामीण संदर्भ के अनुसार अलग–अलग हो सकता है।

इससे यह संकेत मिलता है कि परिवार की आकांक्षा केवल व्यक्तिगत इच्छा नहीं है, बल्कि बच्चों के शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करने वाली सामाजिक प्रक्रिया भी हो सकती है। इस संदर्भ में आरक्षण से लाभ प्राप्त परिवारों में पहली पीढ़ी की शिक्षा भविष्य की पीढ़ियों के लिए आकांक्षा का स्तर बढ़ाने में योगदान दे सकती है।

10. शिक्षा और पेशागत आकांक्षाओं का विस्तार

शिक्षा का प्रभाव केवल ''कितना पढ़ना है'' तक सीमित नहीं रहता। शिक्षा के साथ पेशागत विकल्पों का विस्तार भी हो सकता है। कम शैक्षिक अनुभव वाले परिवारों में पेशागत विकल्प सीमित हो सकते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद परिवार के बच्चों के सामने–

- अध्यापन,
- प्रशासन,
- चिकित्सा,
- कानून,
- इंजीनियरिंग,
- शोध,
- बैंकिंग,
- प्रबंधन,
- सरकारी सेवाएँ,
- उद्यमिता

जैसे विकल्प अधिक स्पष्ट हो सकते हैं। इस प्रकार शिक्षा परिवार की पेशागत कल्पना का विस्तार कर सकती है।

11. आर्थिक परिवर्तन और शैक्षिक निवेश

यदि प्रथम पीढ़ी का उच्च शिक्षित सदस्य रोजगार प्राप्त करता है तो परिवार की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन संभव है। आर्थिक संसाधनों में सुधार होने पर परिवार अगली पीढ़ी की शिक्षा पर अधिक निवेश कर सकता है।

इस प्रकार एक संभावित प्रक्रिया इस प्रकार हो सकती है–

- उच्च शिक्षा रोजगार आय में वृद्धि शिक्षा पर अधिक निवेश अगली पीढ़ी की बेहतर शिक्षा।
- हालाँकि यह संबंध सभी परिवारों में समान नहीं होता और आर्थिक, सामाजिक तथा क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग हो सकता है।

12. सामाजिक सम्मान और पारिवारिक प्रतिष्ठा

शिक्षा परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा को भी प्रभावित कर सकती है। जब परिवार का कोई सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त करता है, तो समुदाय में उसकी पहचान बदल सकती है।

शिक्षित सदस्य–

- सरकारी योजनाओं की जानकारी,
- प्रशासनिक प्रक्रियाओं की समझ,
- सामाजिक संगठनों में भागीदारी,
- समुदाय के अन्य विद्यार्थियों को मार्गदर्शन
- जैसे कार्यों में योगदान कर सकता है।

इससे शिक्षा का प्रभाव व्यक्तिगत स्तर से आगे बढ़कर सामुदायिक स्तर तक पहुँच सकता है।

13. महिलाओं और पीढ़ीगत शैक्षिक परिवर्तन

पीढ़ीगत शैक्षिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यदि परिवार की पहली पीढ़ी की महिला उच्च शिक्षा प्राप्त करती है, तो उसके बच्चों के लिए शिक्षा संबंधी आकांक्षाओं में परिवर्तन की संभावना महत्वपूर्ण अध्ययन–विषय बनती है।

भारत में महिलाओं की अंतर–पीढ़ीगत शैक्षिक गतिशीलता पर हालिया शोध भी यह दिखाता है कि माताओं की आकांक्षा, माता–पिता का प्रोत्साहन तथा आर्थिक और सामाजिक बाधाएँ बेटियों की शिक्षा की दिशा को प्रभावित करती हैं। इसलिए आरक्षण से लाभ प्राप्त महिलाओं की शिक्षा का अध्ययन केवल महिला सशक्तीकरण तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसके अगली पीढ़ी पर प्रभाव को भी समझना चाहिए।

14. आरक्षण से प्राप्त अवसर और अंतर–पीढ़ीगत प्रभाव

आरक्षण नीति का प्रत्यक्ष प्रभाव उस विद्यार्थी पर पड़ सकता है जिसे प्रवेश का अवसर प्राप्त हुआ है। लेकिन इसका संभावित अप्रत्यक्ष प्रभाव परिवार की अगली पीढ़ी तक जा सकता है।

हालिया भारतीय शोध में उच्च शिक्षा में व्ठ आरक्षण के अंतर–पीढ़ीगत प्रभाव का अध्ययन करते हुए पाया गया कि नीति से प्रभावित माताओं के बच्चों में कुछ स्वास्थ्य परिणाम बेहतर रहे और संभावित माध्यमों में मातृ शिक्षा तथा स्वायत्तता को रेखांकित किया गया।

इससे एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय प्रश्न सामने आता है–

- क्या शिक्षा का सामाजिक लाभ व्यक्ति से आगे बढ़कर परिवार की अगली पीढ़ी के जीवन–अवसरों को भी बदलता है?
- यह प्रश्न प्रस्तुत अध्ययन के केंद्र में है।

15. पहली पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक परिवर्तन का मॉडल

इस अध्ययन के आधार पर निम्न समाजशास्त्रीय मॉडल प्रस्तावित किया जा सकता हैः

चरण 1– ऐतिहासिक सामाजिकध्शैक्षिक वंचना

↓

चरण 2– आरक्षण अथवा सकारात्मक कार्रवाई से अवसर

↓

चरण 3– पहली पीढ़ी का उच्च शिक्षा में प्रवेश

↓

चरण 4– शैक्षिक एवं सामाजिक पूँजी का निर्माण

↓

चरण 5– रोजगार एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में परिवर्तन

↓

चरण 6– परिवार की शैक्षिक आकांक्षाओं में वृद्धि

↓

चरण 7– अगली पीढी के लिए उच्च शिक्षा का सामान्यीकरण

↓

चरण 8– अंतर–पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता

यह मॉडल इस शोध–पत्र की प्रमुख वैचारिक विशेषता है।

16. आरक्षण के बाद भी बनी रहने वाली चुनौतियाँ

यह मानना उचित नहीं होगा कि आरक्षण से प्राप्त अवसर के बाद सभी समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। कई परिवारों में निम्न समस्याएँ बनी रह सकती हैं–

- आर्थिक संसाधनों की कमी।
- गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा का अभाव।

- डिजिटल संसाधनों की कमी।
- ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा संस्थानों की सीमित उपलब्धता ।
- सामाजिक पूर्वाग्रह।
- भाषा संबंधी समस्या ।
- प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संसाधनों का अभाव।
- रोजगार की अनिश्चितता ।
- छात्रवृत्ति अथवा सहायता तक सीमित पहुँच ।
- परिवार पर आर्थिक जिम्मेदारियाँ।

इसलिए अंतर–पीढ़ीगत परिवर्तन को केवल आरक्षण से जोड़कर देखना पर्याप्त नहीं होगा। परिवार की आर्थिक स्थिति, विद्यालयी शिक्षा, क्षेत्र, लिंग, संस्थागत सहायता और स्थानीय सामाजिक संरचना भी महत्वपूर्ण हैं।

17. प्रमुख निष्कर्ष

उपलब्ध साहित्य और समाजशास्त्रीय विश्लेषण के आधार पर निम्न निष्कर्ष महत्वपूर्ण हैं–

- उच्च शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का प्रभावी माध्यम हो सकती है।
- आरक्षण ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के लिए उच्च शिक्षा के अवसरों का विस्तार करने वाला नीति–साधन है।
- पहली पीढ़ी का उच्च शिक्षित सदस्य परिवार में शैक्षिक संस्कृति के परिवर्तन का वाहक बन सकता है।
- उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद परिवार में बच्चों के लिए अपेक्षित शिक्षा का स्तर बढ़ सकता है।
- परिवार की शैक्षिक आकांक्षाएँ अगली पीढ़ी के शैक्षिक निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं।
- शिक्षा पेशागत आकांक्षाओं का विस्तार कर सकती है।
- प्रथम पीढ़ी के उच्च शिक्षित सदस्य द्वारा प्राप्त संस्थागत जानकारी अगली पीढ़ी के लिए सामाजिक पूँजी बन सकती है।
- महिला शिक्षा का अंतर–पीढ़ीगत प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण अध्ययन–विषय है।
- आरक्षण का संभावित प्रभाव केवल लाभार्थी विद्यार्थी तक सीमित न रहकर परिवार और अगली पीढ़ी तक जा सकता है।
- आर्थिक सहायता, छात्रवृत्ति और संस्थागत सहयोग इस प्रक्रिया को मजबूत कर सकते हैं।
- अंतर–पीढ़ीगत परिवर्तन को केवल आरक्षण के परिणाम के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा, परिवार, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना के संयुक्त प्रभाव के रूप में समझना चाहिए।

18. सुझाव

- पहली पीढ़ी के उच्च शिक्षा विद्यार्थियों की पहचान के लिए संस्थागत व्यवस्था विकसित की जाए।
- ऐसे विद्यार्थियों को प्रवेश के बाद शैक्षणिक मार्गदर्शन दिया जाए।
- छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता को समयबद्ध बनाया जाए।
- परिवारों में उच्च शिक्षा के प्रति जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ।

- पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
- ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा एवं डिजिटल संसाधनों की पहुँच बढ़ाई जाए।
- महिला विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षिक सहयोग उपलब्ध कराया जाए।
- उच्च शिक्षा संस्थानों में करियर काउंसलिंग को मजबूत किया जाए।
- परिवार की अगली पीढ़ी को प्रतियोगी परीक्षाओं एवं उच्च शिक्षा की जानकारी उपलब्ध कराई जाए।
- आरक्षण के मूल्यांकन में केवल प्रवेश नहीं बल्कि पीढ़ीगत शैक्षिक परिवर्तन को भी एक महत्वपूर्ण शोध–आयाम बनाया जाए।

20. उपसंहार

आरक्षण नीति को केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए उपलब्ध कराए गए अवसर के रूप में देखना इसके संभावित सामाजिक प्रभाव को सीमित कर देता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से किसी नीति का महत्व उसके प्रत्यक्ष परिणामों के साथ–साथ उसके दीर्घकालीन सामाजिक प्रभावों में भी निहित होता है।

जब किसी परिवार की पहली पीढ़ी उच्च शिक्षा प्राप्त करती है, तो शिक्षा के प्रति परिवार का दृ ष्टिकोण बदल सकता है। उच्च शिक्षा का अनुभव अगली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन, सूचना, सामाजिक संपर्क और आकांक्षाओं के रूप में उपलब्ध हो सकता है।

इस प्रकार एक विद्यार्थी की उच्च शिक्षा केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं रहती वह परिवार के सामाजिक भविष्य को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया बन सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि आरक्षण से प्राप्त शैक्षिक अवसर का मूल्यांकन केवल प्रवेश और सीटों की संख्या से नहीं, बल्कि इस बात से भी किया जाना चाहिए कि वह अवसर परिवार की अगली पीढ़ी के शैक्षिक अवसरों और आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रभावित करता है।

इस दृष्टि से आरक्षण, शिक्षा और अंतर–पीढ़ीगत सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंध भारतीय समाजशास्त्रीय शोध के लिए एक महत्वपूर्ण और अपेक्षाकृत विशिष्ट क्षेत्र प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Annadurai, G., & Sahoo, S. (2025). Improving First Generation College Students Education and Employment Outcomes : Effects of a Targeted Scholarship Program. IZA Discussion Paper No. 17879.
- Basant, R., & Sen, G. (2022). Quota-based affirmative action in higher education : Impact on other backward classes in India. The Journal of Development Studies-
- Bourdieu, P. (1986). The Forms of Capital. In J. G. Richardson (Ed.), Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education.
- Government of India- Constitution of India] Article 46.
- Serneels, P., & Dercon, S. (2020). Aspirations, Poverty and Education : Evidence from India. RISE Working Paper Series, 20/053.
- Serneels, P., & Dercon, S. (2021). Aspirations, Poverty and Education : Evidence from India. The Journal of Development Studies, 57 (1).
- University Grants Commission. UGC Guidelines for Strict Implementation of Reservation Policy of the Government in Universities, Deemed to be Universities, Colleges and Other Grant -in-Aid Institutions and Centres.

- University Grants Commission. FAQ/Guidelines regarding SC/ST reservation and discrimination-related provisions in higher education.
- Surana, M., & Rai, R. (2025). Affirmative action and educational attainment of disadvantaged religious minorities : Evidence from India. Economic Inquiry, 63(4), 1367-1385.
- Intergenerational effects of affirmative action in higher education : Evidence from India- Economics Letters, 244 (2024), 112010.
- Pragasan, C., & Tirkey, Z. (2026). Stratification and Academic EÛperiences of First-Generation Learners in Indian Higher Education : A Thematic Review. Asian Journal of Education and Social Studies, 52(2), 397- 405.
- Educational Aspirations among First-Generation Students and their Parental Influence towards Pursuing Tertiary Education. Procedia - Social and Behavioral Sciences, 7, 414-418.

****